कहानी

झूठ बोलने की सजा

एक समय की बात है, हरे-भरे पेड़ों और मिट्टी की खुशबू से भरे एक छोटे से गाँव में मोहन नाम का एक प्यारा सा लड़का रहता था. गाँव के चारों ओर खेत थे, जहाँ सुबह-सुबह ओस की बूँदें चमकती थीं और पक्षियों की चहचहाहट से वातावरण गूंज उठता था. मोहन का घर गाँव के किनारे पर था, जहाँ वह अपने दादा-दादी के साथ रहता था. उसके माता-पिता शहर में काम करते थे, इसलिए दादा-दादी ही उसका पूरा संसार थे. वे उसे बहुत प्यार करते थे और हर रात उसे कहानियाँ सुनाकर सुलाते थे.

दादा जी की आवाज़ में एक अलग ही जादू था, और दादी की कहानियों में इतनी मिठास होती थी कि मोहन उनकी दुनिया में खो जाता था. कभी वे उसे बहादुर राजाओं की कहानी सुनाते, तो कभी चतुर जानवरों की. हर कहानी के अंत में एक सीख होती, जिसे दादा-दादी बड़े प्यार से समझाते थे.

एक शाम, जब आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे और ठंडी हवा बह रही थी, मोहन ने दादी से कहा, 'दादी, आज मुझे कोई ऐसी कहानी सुनाओ, जिससे मैं कुछ नया सीख सकूँ.' दादी मुस्कुराईं और बोलीं, 'ठीक है, आज मैं तुम्हें एक ऐसे लड़के की कहानी सुनाऊँगी, जो बिल्कुल तुम्हारी तरह था, लेकिन उससे एक बड़ी गलती हो गई थी.'

बहुत समय पहले, उसी तरह के एक गाँव में राजू नाम का एक लड़का रहता था. वह बहुत ही तेज और खेलकूद में आगे था, लेकिन उसमें एक बुरी आदत थी—वह छोटी-छोटी बातों पर झूठ बोल देता था. कभी वह अपने दोस्तों से कहता कि उसने जंगल में शेर देखा, तो कभी कहता कि उसे कोई खजाना मिला है. शुरुआत में उसके दोस्त उसकी बातों पर विश्वास कर लेते थे, लेकिन धीरे-धीरे सबको समझ आने लगा कि राजू सच नहीं बोलता.
एक दिन गाँव के मुखिया ने राजू को खेतों की रखवाली का काम दिया. उसे कहा गया कि वह भेड़ों का ध्यान रखे और अगर कोई खतरा आए तो तुरंत गाँव वालों को बुलाए. राजू को यह काम बहुत महत्वपूर्ण लगा, लेकिन उसकी शरारती आदत अभी भी नहीं गई थी.

दोपहर के समय, जब धूप तेज थी और बाकी लोग अपने-अपने काम में लगे थे, राजू को मजाक सूझा. वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा, 'बचाओ! बचाओ! भेड़िया आ गया!' उसकी आवाज़ सुनकर गाँव वाले सब कुछ छोड़कर दौड़ते हुए आए. लेकिन जब उन्होंने देखा कि वहाँ कोई भेड़िया नहीं है, तो वे बहुत नाराज़ हुए. राजू हँसते हुए बोला, 'मैं तो बस मज़ाक कर रहा था!'

गाँव वालों ने उसे समझाया कि ऐसा मज़ाक ठीक नहीं है, लेकिन राजू ने उनकी बात को गंभीरता से नहीं लिया. कुछ दिनों बाद उसने फिर वही किया. इस बार भी वह चिल्लाया, 'भेड़िया आ गया!' लोग फिर दौड़े, लेकिन इस बार भी वह झूठ निकला. अब गाँव वालों का धैर्य टूट गया. उन्होंने तय किया कि वे अब राजू की बातों पर विश्वास नहीं करेंगे.

समय बीतता गया, और एक दिन सच में एक भेड़िया जंगल से निकलकर खेतों की ओर आ गया. राजू ने उसे देखा तो उसकी हालत खराब हो गई. वह डर के मारे कांपने लगा और पूरी ताकत से चिल्लाने लगा, 'बचाओ! सच में भेड़िया आ गया! कोई तो आओ!' उसकी आँखों में डर साफ दिख रहा था, और इस बार वह सच बोल रहा था.

लेकिन गाँव वालों ने उसकी आवाज़ सुनी और सोचा कि वह फिर मज़ाक कर रहा है. कोई भी उसकी मदद के लिए नहीं आया. भेड़िया धीरे-धीरे उसके पास आने लगा. राजू ने हिम्मत जुटाई और किसी तरह पेड़ पर चढ़ गया. वह पूरी रात वहीं बैठा रहा, डर और पछतावे से भरा हुआ. अगली सुबह जब गाँव वाले खेतों की ओर गए, तो उन्होंने राजू को पेड़ पर बैठे देखा. वह बहुत डरा हुआ था और उसकी आँखों में आँसू थे. उसने नीचे उतरकर सबको अपनी गलती बताई और कहा, 'मुझे माफ कर दीजिए, मैंने बहुत बड़ी गलती की है. अगर मैं पहले झूठ न बोलता, तो आज आप लोग मेरी मदद जरूर करते.'

गाँव वालों को उस पर दया आई, लेकिन उन्होंने उसे एक महत्वपूर्ण सीख दी. उन्होंने कहा, 'राजू, विश्वास एक ऐसी चीज़ है, जो एक बार टूट जाए तो उसे वापस पाना बहुत मुश्किल होता है.' उस दिन के बाद राजू ने कभी झूठ नहीं बोला. उसने धीरे-धीरे सबका विश्वास फिर से जीतने की कोशिश की. वह ईमानदारी से काम करने लगा और दूसरों की मदद करने लगा.

दादी ने कहानी खत्म की और मोहन से पूछा, 'अब बताओ, इस कहानी से क्या सीख मिली?' मोहन ने सोचते हुए कहा, 'हमें हमेशा सच बोलना चाहिए, क्योंकि अगर हम झूठ बोलेंगे तो लोग हम पर भरोसा नहीं करेंगे.' दादी ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और बोलीं, 'बिल्कुल सही.'

उस रात मोहन ने मन ही मन ठान लिया कि वह हमेशा सच बोलेगा और दादा-दादी की बातों को याद रखेगा. समय के साथ वह एक समझदार और ईमानदार लड़का बन गया, जिसे गाँव के सभी लोग प्यार करते थे.

सीख

हमें हमेशा सच्चाई और ईमानदारी का साथ देना चाहिए, क्योंकि यही गुण हमें जीवन में सम्मान और विश्वास दिलाते हैं.

बिंदु मिलाओ

रंग भरो

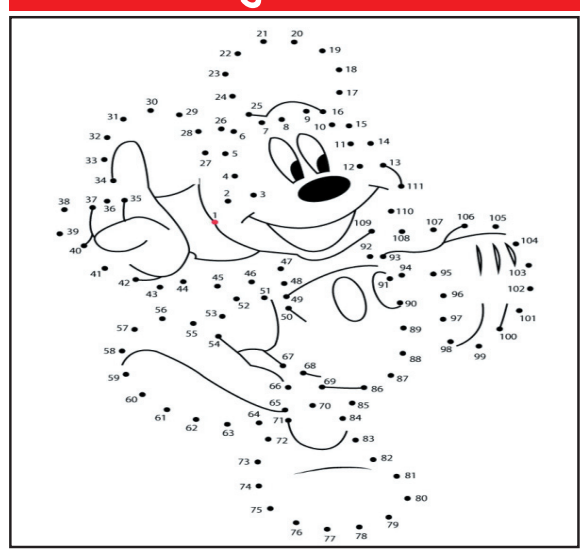

प्रेरक प्रसंग

दुर्गावती : साहस की मिसाल

रानी दुर्गावती भारत की एक महान और प्रेरणादायक शासक थीं, जिनका जीवन कर्म, साहस और जनसेवा का अद्भुत उदाहरण है. उनका जन्म एक राजपूत परिवार में हुआ और बचपन से ही उन्होंने युद्ध कौशल, घुड़सवारी और प्रशासनिक समझ विकसित की. उनका विवाह दलपत शाह से हुआ, लेकिन उनके निधन के बाद रानी दुर्गावती ने अपने छोटे पुत्र के लिए गोंडवाना राज्य की जिम्मेदारी संभाली.

रानी दुर्गावती का सबसे बड़ा काम उनका उत्कृष्ट शासन था. उन्होंने अपने राज्य में जनता के कल्याण को सबसे ऊपर रखा. खेती को मजबूत बनाने के लिए उन्होंने कई तालाब, कुएँ और जल-संचय के साधन बनवाए, जिससे किसानों को बहुत लाभ हुआ. उस समय पानी की व्यवस्था ही जीवन का आधार थी, और रानी ने इसे समझते हुए इस दिशा में विशेष कार्य किए. उनके प्रयासों से गोंडवाना एक समृद्ध और खुशहाल राज्य बन गया.

वे न्यायप्रिय शासक थीं. रानी दुर्गावती स्वयं जनता की समस्याएँ सुनती थीं और तुरंत समाधान करने की कोशिश करती थीं. उनके दरबार में सभी को समान न्याय मिलता था, चाहे वह अमीर हो या गरीब. उन्होंने प्रशासन को इतना मजबूत बनाया कि राज्य में शांति और व्यवस्था बनी रही.

सुरक्षा के क्षेत्र में भी उनके कार्य उल्लेखनीय थे. उन्होंने अपनी सेना को मजबूत किया और सीमाओं की रक्षा के लिए कई कदम उठाए. जब अकबर के शासन में मुग़ल सेना ने गोंडवाना पर आक्रमण किया, तब रानी दुर्गावती ने बिना डरे उसका सामना किया. आसफ खान के नेतृत्व वाली सेना संख्या में अधिक थी, फिर भी रानी ने अपनी रणनीति और साहस से उन्हें कड़ी टक्कर दी.

युद्ध के दौरान रानी दुर्गावती ने स्वयं नेतृत्व किया, जो उनके अद्वितीय साहस को दर्शाता है. अंत में, जब वे घायल हो गईं और स्थिति कठिन हो गई, तब उन्होंने आत्मसमर्पण करने के बजाय वीरगति को चुना. यह उनके आत्मसम्मान और दृढ़ निश्चय का सबसे बड़ा उदाहरण है.

रानी दुर्गावती के कार्य हमें सिखाते हैं कि एक सच्चा नेता वही होता है जो अपनी जनता के लिए काम करे, न्याय बनाए रखे और हर चुनौती का सामना साहस से करे.

रोचक तथ्य

सीओ 2 एक महत्वपूर्ण गैस

- कार्बन डाइऑक्साइड एक रंगहीन और गंधहीन गैस है.
- इसका रासायनिक सूत्र सीओ 2 होता है (एक कार्बन और दो ऑक्सीजन).
- हम जब साँस छोड़ते हैं, तब हमारे शरीर से सीओ 2 निकलती है.
- पेड़-पौधे इस गैस को लेकर प्रकाश संश्लेषण करते हैं और ऑक्सीजन बनाते हैं.
- यह गैस पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने में मदद करती है, लेकिन अधिक मात्रा में यह गर्मी बढ़ा सकती है.
- सीओ 2को ठंडा करके 'ड्राई आइस' बनाया जाता है, जो बिना पानी बने सीधे गैस बन जाती है.
- यह गैस आग बुझाने वाले यंत्र में इस्तेमाल होती है.
- सॉफ्ट ड्रिंक्स में जो बुलबुले होते हैं, वे सीओ 2 गैस की वजह से होते हैं.
- ज्वालामुखी से भी बड़ी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड निकलती है.
- यह गैस वातावरण में अधिक बढ़ जाए तो ग्लोबल वार्मिंग का कारण बन सकती है.

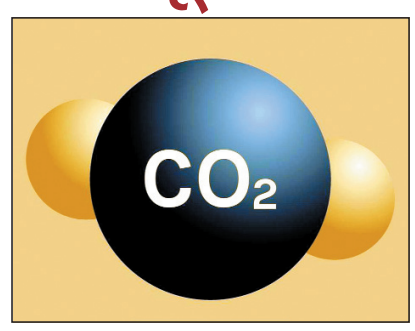

भूल भुलैया

जानकारी

प्रकृति का उपहार बरगद

बरगद भारत का एक बहुत ही प्रसिद्ध और विशाल वृक्ष है. यह पेड़ अपनी लंबी उम्र, घने फैलाव और मजबूत जड़ों के कारण जाना जाता है. बरगद का पेड़ आमतौर पर गाँवों, मंदिरों और खुले मैदानों में देखने को मिलता है, जहाँ यह लोगों को घनी छाया प्रदान करता है.

बरगद की सबसे खास विशेषता उसकी लटकती हुई जड़ें होती हैं, जिन्हें 'प्रोप रूट्स' कहा जाता है. ये जड़ें शाखाओं से नीचे की ओर बढ़ती हैं और जमीन में पहुँचकर तने का रूप ले लेती हैं. इसी कारण एक ही पेड़ बहुत बड़े क्षेत्र में फैल जाता है और देखने में ऐसा लगता है जैसे कई पेड़ एक साथ खड़े हों. यह पेड़ सैकड़ों साल तक जीवित रह सकता है, इसलिए इसे दीर्घायु वृक्ष भी कहा जाता है.

बरगद का पेड़ पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. यह दिन के समय अधिक मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ता है और हवा को शुद्ध करता है. इसके घने पत्ते धूप और गर्मी से बचाव करते हैं, जिससे इसके नीचे बैठने पर ठंडक महसूस होती है. कई प्रकार के पक्षी, बंदर और अन्य जीव इस पेड़ पर अपना आश्रय बनाते हैं, इसलिए यह जैव विविधता के लिए भी महत्वपूर्ण है.

भारतीय संस्कृति में भी बरगद का पेड़ विशेष स्थान रखता है. इसे पवित्र माना जाता है और कई धार्मिक मान्यताओं से जोड़ा गया है. महिलाएँ वट सावित्री व्रत के दिन बरगद के पेड़ की पूजा करती हैं और अपने परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करती हैं. यह पेड़ स्थिरता, शक्ति और दीर्घ जीवन का प्रतीक माना जाता है. बरगद का पेड़ औषधीय गुणों से भी भरपूर होता है. इसकी छाल, पत्ते और जड़ें आयुर्वेद में उपयोग की जाती हैं. इनसे कई रोगों के उपचार में सहायता मिलती है, जैसे त्वचा संबंधी समस्याएँ और दाँतों की बीमारियाँ.

अंत में, बरगद का पेड़ केवल एक वृक्ष नहीं, बल्कि प्रकृति का एक अनमोल उपहार है. यह हमें छाया, शुद्ध वायु, आश्रय और सांस्कृतिक महत्व प्रदान करता है. इसलिए हमें इस पेड़ की रक्षा करनी चाहिए.

कविता

पेड़ लगाओ जीवन बचाओ

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ,
हरियाली से दुनिया सजाओ.
छाया देते, फल भी देते,
सबको ये संदेश ये देते.

हवा को ये साफ बनाते,
धरती को सुंदर महकाते.
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,
खुशहाल हम सब
जीवन पाएँ.

बूझो तो जानें

- वह क्या है जिसकी गर्दन है पर सिर नहीं?
  जवाब- बोतल
- काला घोड़ा, सफेद सवारी, एक उतरा तो दूसरे की बारी.
  जवाब- तवा और रोटी
- बूझो भैया एक पहेली, जब काटो तो नई नवेली.
  जवाब- पेंसिल
- एक लड़की 40 फीट ऊंची सीढ़ी से गिर गई, फिर भी उसे चोट नहीं लगी, कैसे?
  जवाब- क्योंकि वह सबसे निचले पायदान से गिरी थी.
- वह क्या है जो तुम्हारा है पर उसे तुमसे ज्यादा दूसरे लोग इस्तेमाल करते हैं?
  जवाब- तुम्हारा नाम
- क्या है जो हमेशा बढ़ती रहती है और कभी कम नहीं होती?
  जवाब- उम्र

हंसी-ठिठोली

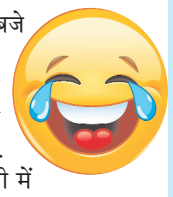

- चीकू-तुम रात में कितने बजे सोते हो?
  मीकु- अगर किताब उठा लूँ तो 9 बजे और अगर मोबाइल उठा लूं तो 2 बजे.
- टीचर- वाक्य को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करो, वसंत ने मुझे मुक्का मारा.
  चिंटू-वसन्तपंचमी
- सोनू- हम लद्दाख घूमने गए थे, वहाँ जून में भी लोग गर्म पानी से नहाते हैं.
  नटखट नीटू- इसमें कौन सी बड़ी बात है, हम दिल्ली में भी जून में गर्म पानी से नहाते हैं.
  सोनू- वो कैसे?
  नटखट नीट-दिल्ली में जून की गर्मी में टंकी का पानी इतना गर्म हो जाता है कि नल से सिर्फ गर्म पानी ही आता है.
- इलेक्ट्रिशियन- यह रेडियो ठीक है, बस मौसम खराब होने की वजह से काम नहीं कर पा रहा है.
  यामुंडा- लो 100 रुपये, और इसमें नया मौसम डाल दो!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- 1. गिलहरी के पीछे पेड़ की टहनी, 2. गिलहरी की आँखों में हुई पसीने की बूंद, 3. गिलहरी की पूंछ में अंतर, 4. घास में [illegible] हुआ कीड़ा, 5. गिलहरी के कान में अंतर